DEV SANSKRITI: Interdisciplinary International Journal **(2014), 4, 32-37**

पुराणों में भारतवर्ष की राष्ट्रीयता एवं भौगोलिक सीमाएं

बजरंग लाल अत्रि

सारांश

भारत के अनेकों आधुनिक इतिहासकारों में यह भ्रम फैला हुआ है कि ब्रिटिश सरकार ने ही भारत को एक राष्ट्र के रूप में एकीकरण किया है तथा भारत : एक निर्माणाधीन राष्ट्र है। किन्तु पुराणों और अन्य संस्कृत ग्रन्थों में प्राचीनकाल से ही भारत राष्ट्र और इसकी राष्ट्रीयता का वर्णन किया गया है। विभिन्न पुराणों में न केवल भारतवर्ष नाम की व्याख्या ही की गई है बल्कि इसकी अस्मिता, सांस्कृतिक प्रभाव और भौगोलिक सीमाओं का भी वर्णन किया गया है। विभिन्न पुराणों में भुवनकोश अर्थात् प्राचीन विश्व की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करते हुए भारतवर्ष की भोगौलिक सीमा, इसकी सांस्कृतिक विरासत, विभिन्न भाषाओं, परम्पराओं, प्रान्तरों वाले विशाल भूभाग का सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सामुदायिक राष्ट्र के रूप में वर्णन किया गया है। प्रस्तुत शोधलेख में पौराणिक प्रमाणों के आधार पर भारत के प्राचीन इतिहास, इसके नामकरण, भौगोलिक स्थिति तथा भारतीय संस्कृति की प्राचीनता का वर्णन किया गया है। पुराणों में ही इस देश का नाम भारतवर्ष पहली बार प्राप्त होता है। पुराणों के भौगोलिक विवरणों के अनुसार भारतवर्ष जम्बूद्वीप के इलावृत्तवर्ष में स्थित मेरूपर्वत अर्थात् पामीर नाट के दक्षिण में बसा है और आज भी भारत अफगानिस्तान स्थित पामीर पर्वतमाला के दक्षिण में स्थित है। पुराणों में भारतवर्ष के जिन पर्वतों, नदियों, सरोवरों, तीर्थों तथा सागरों का वर्णन किया गया है वे आज भी भारतीय उप महाद्वीप में वर्तमान हैं। आधुनिक योरापीय विद्वानों और उनके शिष्य भारतीय इतिहासकारों ने पुराणों को पंडितों की गप्प बताया और प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन में पुराणों एवं अन्य संस्कृत ग्रन्थों को ऐतिहासिक शोधकार्य के योग्य नहीं माना। विश्व के प्राचीन राष्ट्रों मिश्र, यूरोप, चीन, मध्यपूर्व के देशों का प्राचीन इतिहास उनके प्राचीन साहित्य और अन्य प्रमाणों के आधार पर लिखा गया है किन्तु भारत के इतिहास लेखन में भारतीय साहित्य को प्रमाण के योग्य नहीं माना जाता, यह आश्चर्य का विषय है। अतः भारत में इतिहास के क्षेत्र में संस्कृत वाङमय पर शोधकार्य अत्यन्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए यह शोधपत्र प्रस्तुत किया गया है।

कूट शब्द : पुराण, भारतवर्ष, राष्ट्रीयता एवं भौगोलिक सीमाएं।

आधुनिक काल में भारतीय इतिहास का लेखन ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों द्वारा लिखा गया था। यह वह काल था जब विश्व का लगभग प्रत्येक देश योरोपीय जातियों के अधीन था। ऐसी परिस्थितियों में योरोपीय विद्वानों की मान्यताओं, अनुमानों और आधे–अधूरे अध्ययन के आधार पर प्राप्त निष्पत्तियों पर आधारित भारतीय इतिहास का निर्माण किया गया था। इस कार्य ठोस तथ्यों और प्रमाणों को या तो जाना नहीं गया अथवा जान बूझ उपेक्षित कर दिया गया। अधिकांश योरोपीय इतिहासकार सैनिक अधिकारीया प्रशासक थे जिनका उद्देश्य इतिहास अध्ययन में अपनी मनमानी स्थापनाओं के द्वारा भारत में औपनिवेशिक शासन को दृढ़ करना था।

जिस प्रकार से रोम, युनान, चीन आदि देशों का इतिहास प्राचीन रोमन, यूनानी या चीनी साहित्य और परम्पराओं के मूल रूप में अध्ययन के बिना लिखना बेमानी है उसी प्रकार प्राचीन भारत का इतिहास वेद और संस्कृत भाषा के अध्ययन के बिना लिखना ऐतिहासिक तुक्के बाजी ही है। योरोपीय इतिहासकारों ने अपने अल्पज्ञान या अहंमन्यता के कारण कई भारतीय ऐतिहासिक प्रमाणों को न केवल उपेक्षित कर दिया बल्कि उन्हें ब्राह्मणों की गप्पें बताकर हजारों वर्षों से संरक्षित प्राचीन भारत के इतिहास, साहित्य, विज्ञान के विशाल ग्रन्थों को अप्रमाणित घोषित करने का कार्य भी किया। पुराणों में भारतीय राजवंशों का आनुक्रमिक वर्णन हमें पंडितों की गप्प लगता है और मिश्र के पत्थरों पर चित्र लिपपि में उत्कीर्ण प्राचीन राजवंश सत्य लगते हैं। भारत वर्ष नामक राष्ट्र का नाम, नामकरण, भौगोलिक सीमाएं और संस्कृति वेद, पुराण, ज्योतिष ग्रन्थों में हजारों वर्षों से विस्तार से वर्णित किया गया उसे प्रमाणित नहीं माना जा रहा है। इतिहासकारों ने रामायण और महाभारत को नवीं शताब्दी ईसापूर्व में रचित तथा इन्हें साहित्यिक कल्पनाएं बताया और उन्हें हम मान रहे हैं। अतः भारत में इतिहास के क्षेत्र में संस्कृत वाङमय पर शोधकार्य अत्यन्त आवश्यक है । इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए यह शोधपत्र प्रस्तुत किया गया है।

पुराण भारत की सभ्यता, संस्कृति, इतिहास और वैदिक शास्त्रों तथा दर्शनों का सार तत्व प्रस्तुत करते हैं। विभिन्न पुराणों के भुवनकोश अर्थात् प्राचीन विश्व की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करते हुए भारतवर्ष का विशेष

वर्णन किया गया है। भारतवर्ष की भौगोलिक सीमाओं के प्रतिपादक पुराण भारतीयता के प्रबल प्रतीक हैं। पुराणों में भारतवर्ष की भोगौलिक सीमा, इसकी सांस्कृतिक विरासत, विभिन्न भाषाओं, परम्पराओं, प्रान्तरोंवाले विशाल भूभाग का सामाजिक, धार्मिक एवं सामुदायिक राष्ट्र के रूप में वर्णन करते है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन में पुराणों पर पर्याप्त शोधकार्य नहीं किया गया है। पुराणों में भारतवर्ष के पर्वतों, नदियों, सरोवरों, तीर्थों, शक्तिपीठों, ज्योतिलिंगों तथा सागरों का विस्तृत वर्णन किया गया है और आज भी भारतीय उप महाद्वीप में ये स्थान वर्तमान हैं। पुराणों में ही इस देश का नाम भारतवर्ष पहली बार प्राप्त होता है।

ऋग्वेद में भारत जन का नाम आता है जोकि बाद में भारतवर्ष या भारत राष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ (ऋ. 3/53/12)। पुराणों में इस देश के नाम की व्युत्पत्ति भी की गई है। कुछ पुराणों के अनुसार इस देश का भारतवर्ष नाम ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर पड़ा (विष्णुपुराण 2/1/28–32; भागवतपुराण 5/4/9; अग्निपुराण 107/11–12; लिंगपुराण पूर्वार्द्ध 47/23; स्कंदपुराण, माहेश्वरखण्ड, कुमारीखण्ड– 37/57; ब्रह्माण्डपुराण, पूर्व भाग, प्रक्रियापद, 14/59–62; वायु पुराण, 1/32/7; मार्केण्डयेय पुराण, 53/40–41) तो कुछ पुराणों के अनुसार दुष्यंत पुत्र भरत (ब्रह्मपुराण, 13/57) के नाम पर। निरूक्त वचनों का उद्धरण देते हुए विभिन्न पुराणों में कहा गया है कि प्रजाओं की सृष्टि करने और उसका भरण–पोषण करने के कारण मनु को ही भरत कहा गया और उन्हीं के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा (मत्स्यपुराण, 114/5–6; वायुपुराण, 32/7)। सृष्टि के आदि में स्वयंभू मनु के वंश में ऋषभदेव पुत्र चक्रवर्ती भरत नौ द्वीपों सहित अजनाभवर्ष अर्थात् बृहत्तर भारतवर्ष के सम्राट थे। अतः उसके नाम पर अजनाभवर्ष का नाम भारतवर्ष पड़ा। बाद में चन्द्रवंश में दुष्यंतपुत्र भरत भी उसी के समान चक्र वर्ती और प्रसिद्ध सम्राट हुए और उस समय भरतवंशियों के राज्य भारतवर्ष के नौ खण्डों में से एक सागर संवर्त कुमारीखण्ड में फैले हुए थे। इस नौंवे खण्ड का नाम भरतखण्ड पड़ा। भारतवर्ष की पहचान स्वयंभू मनु, ऋषभदेव पुत्र भरत और दुष्यंतपुत्र भरत सभी के नामों से होती है। इसके साथ ही भारत को मनु, पृथु, इक्ष्वाकु, ययाति, अम्बरीष, नहूष, मुचुकुन्द, कुबे, उशीनर, ऐल पुरूरवा, कुशिक, गाधि, सोम, दिलीप, भगीरथ, ऋषभदेव आदि विभिन्न राज्यों के प्रतापी राजाओं का प्रिय देश कहा गया है।

भारतवर्ष की स्थिति और सीमाओं के बारे में विभिन्न पुराणों में थोड़े बहुत अंतर के साथ निम्नलिखित श्लोक पाया जाता है– *उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैवदक्षिणम्। वर्षंतद् भारतंनामभारती यत्र संतति।।* (ब्रह्मपुराण, 19/1–27; विष्णुपुराण, द्वितीय अंश, 3/1; भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, 20/10; गरूड़ पुराण, प्रथमभाग, अध्याय–27; लिंगपुराण, प्रथम खण्ड, अध्याय–35; वायुपुराण, 1/32/6)अर्थात् समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो वर्ष अर्थात् क्षेत्र है उसका नाम भारतवर्ष है और इसकी सन्तान अर्थात् इसके निवासी भारती कहलाते हैं। यह भी कहा गया है कि भारतवर्ष मेरू पर्वत के दक्षिण में स्थित है। पुराणों के भौगोलिक विवरणों के अनुसार भारतवर्ष जम्बूद्वीप के इलावृत्त वर्ष में स्थित मेरू पर्वत के दक्षिण में बसा है (कूर्मपुराण, पूर्वविभाग, 38/28, 29, 30; मत्स्यपुराण, 113/44; वामनपुराण, 13/4; विष्णुपुराण, 2/7, 14, 15) । प्राचीन भारत के ब्राह्मण, बौद्ध और जैन वाङमय में मेरू, सुमेरू, महामेरू, मेरूववर्ष आदि पर्वतों का वर्णन पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। मेरू पर्वत की महानता के कारण ही भारत में मेरू नामान्त के अनेकों नगर बसाये गए। जैसे अजयमेरू से अजमेर, वृद्ध या बढ़मेरू से बाढ़मेर आदि। पाली भाषा में मेरू, सुमेरू को सुनेरू और नेरू कहा जाता था। इसके अनुक्रम में बीकानेर, बांकनेर, चम्पानेर आदि नगरों के नाम बने हैं। सिद्धान्त गणित के ग्रन्थ सूर्य सिद्धान्त में मेरू पर्वत को भूगोल–मध्य तथा जम्बूनद या जम्बूद्वीप में स्थित बताया गया है (सूर्यसिद्धान्त, भूगोलाध्याय, श्लोक– 12/34)।

आधुनिक विद्वानों, अध्येताओं, भूगर्भशास्त्रियों, भाषा विज्ञानियों और इतिहासकारों ने पामीर पर्वतमाला को पुराणों मे वर्णित मेरू शब्द का अपभ्रंष बताया है (Champman, 2003; Shastri *et al.*, 1969; Singh, 1962)। अफगानिस्तान की पश्तो भाषा इंडो–यूरोपीयन वर्ग की है और हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की तरह पश्तो एवं संस्कृत में पर्याप्त समानता है। आधुनिक पामीर शब्द पश्तो भाषा का है जो कि वस्तुतः संस्कृत शब्दपाद मेरू या उपमेरू का अपभ्रंष है, जैसे इसी प्रकार पाकिस्तान की पर्वतशिखर तिरीच मीर अर्थात् त्रिक् मेरू, कश्मीर अर्थात् कश्यप मेरू, पामीर क्षेत्र का प्राचीन स्थान मर्व, मार्गियाना या मोरू भी मेरू शब्द के अपभ्रंष हैं। पामीर पर्वत अफगानिस्तान के वाखन (संस्कृत शब्द वक्षुन् अर्थात् वक्षु नदी का क्षेत्र) जिले में स्थित है जहां विश्व के सर्वाधिक ऊंचाई वाले पांच पर्वत, चीन के तिएन शान (स्वर्गीय पर्वत), मध्य एशिया के कुन–लुन, अफगानिस्तान के हिन्दुकुश, तिब्बत का काराकोरम और भारत का हिमालय पर्वत मिलते हैं। वाखन कोरीडोर में इन पर्वतों के मिलन को पामीर नाट कहा जाता है। वेदों और पुराणों में वर्णित मेरूवर्ष की नदियों इक्षुमती (Vaksha), वक्षु (Amu darya), चक्षु (Sire darya), सीता (Yarkand) आधुनिक पामीर क्षेत्र में अभी भी बहती हैं।

पुराणों के अनुसार भारत वर्ष की दक्षिण से उत्तर लम्बाई एक हजार योजन और इसका विस्तार नौहजार योजन है। यह पूर्व से पश्चिम खिंचे हुए ऊर्ध्वाकार धनुष की तरह तीर्यकाकार रूप में विस्तीर्ण है । इसका क्षेत्रफल नौ हजार या दश हजार योजन वर्णित किया गया है

(मत्स्यपुराण, 114/10; वायुपुराण, 1/32/11)।यह भी कहा गया है कि जो राजा त्रिकोणाकार फैले इस द्वीप को जीत लेता है वह सम्राट कहलाता है (मत्स्यपुराण, 114/15)। पुराणों के अनुसार भारत वर्ष में इन्द्रद्वीप, कसेरूमान, ताम्रपर्णी, गभस्तिमान, नागद्वीप, सौम्य, गन्धर्व तथा वरूण नौ द्वीप सम्मिलित हैं। हालांकि आधुनिक काल में इन द्वीपों की पहचान एक कठिन काम है परन्तु प्राचीन साहित्य के आधार पर इनकी स्थिति का निम्न प्रकार से अनुमान लगाया जा सकता है :

इन्द्रद्वीप	ब्रह्मदेश या म्यामार
कसेरूमान्	संभवतः थाईलैंड
ताम्रपर्णी	सिंहलद्वीप या श्रीलंका
गभस्तिमान्	अंदमान एवं निकोबार
नागद्वीप	संभवतः जावा
सौम्य	सुमात्रा
गन्धर्व	गान्धार देश या पूर्वी अफगानिस्तान
वारूणद्वीप	आधुनिक बोर्निओ
कुमारीद्वीप (सगर से घिरा हुआ)	आधुनिक भारत

भरतखण्ड के उपरोक्त नौ खण्ड बताए गए हैं। इसके पूर्व में किरात (चीनी) तथा पश्चिममें यवन (युनानी) लोग निवास करते है (ब्रह्मपुराण, 19/1–27; विष्णुपुराण, 2/3/1; मत्स्य पुराण, 114/5–6; कूर्मपुराण, पूर्वविभाग, अध्याय–45; वामनपुराण, अध्याय–13; भागवतपुराण, पंचमस्कंध, अध्याय–16; भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, 20/10; गरूड़ पुराण, प्रथमभाग, अध्याय–27; वायुपुराण, प्रथमभाग, अध्याय–32; शिवपुराण, उमासंहिता, 5/18)। अतः पुराणों के अनुसार भारतवर्ष की सीमाएं उत्तर में हिमवत प्रदेश आधुनिक तिब्बत से लेकर दक्षिण में ताम्रपर्णी अथवा श्रीलंका एवं पश्चिम में ईरान (कश्यप सागर/Caspian Sea) से लेकर वरूणद्वीप अर्थात आधुनिक बोर्नियो तक विस्तृत थी।

पुराणों में भारत के भूगोल का विस्तृत वर्णन किया गयाहै। पुराणों के अनुसार पर्वतराज हिमालय और अन्य सात कुलपर्वत भारतवर्ष में पूजनीय हैं जिनके आंचल से सहस्रों नदियां निकलती हैं (मत्स्यपुराण, 114/17–32; ब्रह्मपुराण, 19/10–24; वायुपुराण, 14/63–78)। आधुनिक स्थिति के अनुसार इन का विवरण इस प्रकार है :–

हिमालय	पश्चिम में पामीर और हिन्दुकुश पर्वतमाला से लेकर पूर्व में अरूणांचल प्रदेश स्थित परशुरामकुण्ड तक।
पारियात्र	हिन्दुकुश पर्वत, अफगानिस्तान।
महेन्द्रपर्वत	आधुनिक ओडिशा एवं आंध्र प्रदेश में स्थित पूर्वी घाट पर्वतमाला।
शुक्तिमान	महेन्द्र पर्वत का एक भाग।
मलयपर्वत	मंगलोर से लेकर मालाबार, त्रावणकोर तकपश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग।
सह्याद्रि	ताप्ती नदी से लेकर दक्षिण में मंगलोर तकपश्चिमी घाट का उत्तरी भाग।
ऋक्षपर्वत	विंध्य पर्वत का पूर्वी भाग।
विंध्यपर्वत	गुजरात से मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश तक फैली मध्य भारत की पर्वतमाला।

इन पर्वतों को कुलपर्वत कहकर उनकी पवित्रता और उनके प्रति श्रद्धा भाव प्रदर्शित किया गया है। इन पर्वतों के अतिरिक्त पुराणों में अनेकों बड़े–छोटे पर्वतों का प्ररोचनात्मक और प्रशंसात्मक वर्णन किया गया है जिनमें पुराणकारों का भारत देश और मातृभूमि के प्रति आदर और समर्पण झलकता है। इन पर्वतों से प्राप्त वनस्पतियों, औषधियों, धातुओं तथा अन्य खनिज पदार्थों पर भारतीयों का जीवन आधारित था अतः पौराणिक साहित्य में इन महान और जीवनदायी पर्वतों की वन्दना की गई है।

इसी प्रकार से पुराणों में भारत की नदियों का वर्णन किया गया है। सिंधु, वितस्ता, चंद्रभागा, पुरूष्णी, विपाशा, शतद्रु, सरस्वती, दृश्द्वती, गंगा, यमुना, गण्डकी, सरयु, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि नदियों का वर्णन कर भारतभूमि के विस्तार का वर्णन किया गया है। इस प्रकार पुराणों में सुदूर उत्तर में ताजिकिस्तान, उज्वेकिस्तान और अफगानिस्तान की वक्षु नदी अर्थात् आमु दरिया से लेकर सुदूर दक्षिण में तमिलनाडु की कृतमाला या वैंगै नदी और पश्चिम में सिन्ध और इसकी सहायक नदियों से लेकर पूर्व में बर्मा की इरावती तक भारतवर्ष की नदियों का वर्णन किया गया है। इन सभी की पुण्य सलिला और भारतीय प्रजाओं का पालन पोषण करने वाली नदियों के रूप में प्रशंसा की गई है ।

भारतीय लोग धार्मिक अनुष्ठानों में स्नान और पवित्रीकरण के समय गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी नदियों का आह्वान (ऋगवेद, 7/49/2) करके भारत की राष्ट्रीय एकता का ही स्मरण करते हैं। नदियों के प्रति पूज्यभावों का वर्णन कर भारतीयों के मनों में नदियों के प्रति श्रद्धा और समर्पण का भाव जाग्रत

किया गया है। नदियों की जीवन दायिनी उपयोगिता के साथ साथ इनकी धार्मिक उपादेयता का प्रशस्तिपूर्वक वर्णन कर इनके प्रति भारतीयों के मनोमस्तिष्क में रागात्मक संबंध स्थापित करने का प्रयास किया गया है ताकि भारतीय नदियों के संरक्षण के लिए समर्पित रहें। हमारे पूर्वज पूजापाठ में समस्त नदियों का स्मरण करके भारतवर्ष की राष्ट्रीय एकता को प्रतिदिन स्मरण रखते थे।

इसी प्रकार से पुराणों में अनेकों तीर्थों का वर्णन करते हुए मानसरोवर, अमरनाथ, कटासराज, हिंगलाज, केदारनाथ, बद्रीनाथ, पशुपतिनाथ, हरिद्वार, गढ़ मुक्तेश्वर, निगमोद्बोध (इन्द्रप्रस्थ), पुष्कर, द्वारिका, प्रयाग, वाराणसी, कामाख्या देवी, परशुराम कुण्ड, त्रिपुरसुन्दरी और भुवनेश्वरी त्रिपुरा, गंगासागर, जगन्नाथपुरी, कांची, रामेश्वरम्, कन्याकुमारी, तिरूवनन्तपुरम, उज्जैन, नाशिक, आदि तीर्थों को पुण्य फलदायी कहा गया है। पुराणों में भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में अवस्थित तीर्थों का वर्णन कर भारतवर्ष की राष्ट्रीय एकता को प्रमाणित किया गया है। कैलासवासी भगवान शंकर की ससुराल बनने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले तथा अन्य देवताओं की विहारभूमि हिमालय की अनेक प्रकार वन्दना और महिमा का वर्णन कर प्रत्येक भारतीय के मन में भारत के पर्वतों के प्रति सहज आत्मीयता उत्पन्न की गई है। धर्माधर्म, पुण्य–पाप, श्रद्धा भक्ति, पूजापाठ आदि पर आस्थावान भारतीयों के लिए ये तीर्थस्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण ही नहीं थे बल्कि इन तीर्थों की यात्रा करके उन्हें इस विशाल देश के विभिन्न भागों में पर्यटन और विभिन्न जातियों, संस्कृतियों एवं परम्पराओं को जानने का भी अवसर मिलता है। इन तीर्थों के प्रति श्रद्धाभाव प्रदर्शित कर अफगानिस्तान से लेकर ब्रह्मदेश अथवा आधुनिक म्यामार तक और तिब्बत से लेकर श्रीलंका के विशाल भूभाग की एक ही सांस्कृतिक राष्ट्रीयता को प्रमाणित किया गया है।

इसी प्रकार उत्तर में केदारनाथ, पशुपतिनाथ, पूर्व में काशी विश्वनाथ, वैद्यनाथ, पश्चिम में नागेश्वर, सोमनाथ, त्र्यम्बकेश्वर, भीमशंकर, मध्य में महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर, धुश्मेश्वर तथा दक्षिण में मल्लिकार्जुन एवं रामेश्वरम् में पुण्य ज्योतिर्लिंगों की यात्राओं के पुण्यदायी वर्णनों से पुराणों में इस देश की एकता को ही साक्ष्यांकित किया गया है। यही नहीं पश्चिम में पाकिस्तान के हिंगलाज पीठ एवं शिवहरकार्य के महिषमर्दिनी पीठ से लेकर पूर्व में त्रिपुरा के उदयपुर के त्रिपुर सुन्दरी पीठ और बांग्लादेश के चिटगांव के पास चन्द्रनाथ पर्वत तक और उत्तर में तिब्बत के मानसरोवर और कश्मीर के अमरनाथ से लेकर दक्षिण में तमिलनाडु के कन्याकुमारी और श्रीलंका में नागद्वीप के इंद्राक्षीपीठ तक समस्त भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बंगलादेश, नेपाल देशों में देवी के शक्तिपीठों का वर्णन कर पौराणिक साहित्य न केवल भारतवर्ष की पवित्रता और महत्ता को दर्शाता है बल्कि इस समस्त भूभाग का एक राष्ट्र के रूप में दिग्दर्शन कराता हैं।

पर्वतों और नदियों के साथ ही पुराणों में भारतवर्ष के जनपदों का भी विशद वर्णन मिलता है। इनमें सुदूर मध्य एशियाई जनपद वाल्हीक, कम्बोज, कपिशा, वाटधान, सुग्ध तथा उत्तर और पश्चिम के जनपद गांधार, दरद, कश्मीर, कैलाश, मद्रक, केकैय, मालव, यौधेय, सिन्ध, सौवीर, सौराष्ट्र, लाट आदि दक्षिण के पाण्डेय, केरल, आंध्र, महाराष्ट्रिक, गोमांतक, पूर्व के जनपद गौड़, अंग, बंग, पुण्ड्र, उड्र, कामरूप आदि तथा मध्यभारतीय जनपद काशी, कौशल, विदेह, मगध, अवन्ति, मत्स्य, कुरू, पांचाल, आदि सम्मिलित है। पुराणों में भारतीय जनपदों या राज्य के वर्णन के अनुसार भारतवर्ष की सीमाएं पश्चिम में आधुनिक पामीर पर्वतमाला से पूर्व में बर्मा तक और उत्तर में तिब्बत से दक्षिण में श्रीलंका तक विस्तृत थीं। इस प्रकार पुराणों में विशाल भारत की एक ही राजनैतिक एवं सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की घोषणा की गई है।

प्राचीन काल में इस देश में अनेकों जनपद, राज्य, प्रांतर थे जिनके अलग–अलग राजा, गणपति और प्रशासनिक केन्द्र होते थे। ये सभी राज्य स्वायत्त थे और अपने आंतरिक प्रशासन में स्वतंत्र थे किन्तु इन राज्यों के निवासी अपने को एक ही राष्ट्र भारतवर्ष के निवासी मानते थे। ये राज्य आपस में संघर्षरत भी रहते थे परन्तु सामान्य जनता को कोई कष्ट नहीं होता था। किसी राज्य की विजय या पराजय से उसकी प्रजा की परम्पराओं, प्रशासनिक, न्यायिक या सांस्कृतिक परिवर्तन नहीं होता था ओर वह सदा गर्व के साथ एक महान राष्ट्र भारतवर्ष के निवासी ही माने जाते थे। यही नहीं इन सैकड़ों जनपदों से निर्मित भारतवर्ष में दण्डविधान, न्यायप्रणाली और प्रशासनिक प्रणाली धर्मशास्त्रों के अनुसार ही चलाई जाती थी जोकि भारत की एकता की एक दृढ़ रज्जु थी।

पुराणों में भारतीय राष्ट्र में सुख, समृद्धि, शांति की वृद्धि के लिए निरंतर कामनाएं की गईं हैं। देश के राष्ट्रनायक तथा सेनाएं प्रसन्नचित्त रहें, ब्राह्मणों, गर्भवती महिलाओं, कन्याओं और वृद्धजनों को कष्ट न हो इस प्रकार की कामनाएं कर अपने राष्ट्र और राष्ट्रवासियों के कल्याण की कामना की गई है। राष्ट्र में वर्षा समय पर हो तथा कृषिकार्य समय पर सम्पन्न होने तथा पशुओं की पुष्टि की कामनाएं की गई हैं। भारत की राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए पुराणों में अनेकों वर्णन किए गए हैं

(वराहपुराण, 192/4–11)। पुराणों में किसी एक वर्ग की बजाय पूरे राष्ट्र की सार्वजनिक सम्पन्नता के लिए प्रार्थनाएं की गई हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार पुराणों में न केवल भारत की भौगोलिक सीमाओं को रेखांकित किया गया है बल्कि इसके प्रत्येक पर्वतों, नदियों, तीर्थों और सागरों का वर्णन कर उनके प्रति आत्मीयता पूर्ण रागात्मक संबंध स्थापित करने का प्रयास किया गया है । पुराण प्रत्येक जाति, समुदाय, सम्प्रदाय और चिन्तन का समादर करते हुए उसका भारतवर्ष और उसकी राष्ट्रीयता से सहज संबंध का व्याख्यान करते हैं जोकि विश्व के किसी भी देश के इतिहास एवं साहित्य में दुर्लभ है। प्राचीन और मध्यकाल के युद्धों, नरसंहारों, संस्कृति विध्वंसक योरोपीय एवं पश्चिम–मध्य एशियाई तथाकथित साम्राज्यों तथा आधुनिक विकसित राष्ट्रों की तुलना में भारतीय राष्ट्रीयता की संकल्पना कहीं अधिक जनोन्मुख, उत्तरदायी, न्यायकारी, मानवीय और प्रगतिशील चिंतन पर आधारित थी। भारत ही नहीं विश्व के प्राचीन राष्ट्रों के इतिहास के ज्ञान के लिए भारत के प्राचीन ग्रन्थों का समीक्षात्मक अध्ययन परमावश्यक है जोकि अभी तक शोधपूर्व दृष्टिकोण से नहीं किया गया है।

यूरोप और उसके देशों का इतिहास प्राचीन यूनानी और रोमन भषाओं के पौराणिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक वर्णनों के आधार पर लिखा गया। चीनका इतिहास चीनी ऐतिह्य और साहित्यिक कृतियों के आधार पर लिखा गया। मिश्र आदि प्राचीन देशों के इतिहास लेखन मे उनके प्राचीन सन्दर्भों, लेखों को प्रमाण माना गया। प्राचीन देशों में भारत ही ऐसा देश है जिसके प्राचीन इतिहास के निर्माण के लिए इसके प्राचीन वैदिक, पौराणिक, ऐतिहासिक साहित्य को प्रमाणित नहीं माना गया और मनमाने तरीके से योरोपीय विद्वानों की आधारहीन मान्यताओं और जातीय दुराग्रह के आधार पर इतिहास लेखन किया गया।

इस प्रकार पुराणों में भारतवर्ष नामक राष्ट्र इसके नामकरण का इतिहास तथा इसकी सांस्कृतिक परम्पराओं का विस्तार से वर्णन किया गया है। भारत हजारों वर्षों से एक राष्ट्र के रूप में विश्व की सभ्यताओं में अग्रगण्य रहा है। इसीलिए इसे जगदगुरू कहा जाता रहा है। विश्व के देशों को सभ्यता का प्रकाश भारत ने ही दिया यह पुराणों तथा अन्यान्य ग्रन्थों में वर्णित है। हजारों वर्षपूर्व भी जब भारतवर्ष एक महामहिम्न राष्ट्र के रूप में वर्तमान था विश्व की सभ्य कहलाने वाली आधुनिक देश और जातियां अज्ञानान्धकार में थी और जंगली जीवन यापन करती थी। अतः यह मान्यता असत्य है कि ब्रिटिश लोगों ने ही भारत को एकसूत्र में बांधा इससे पहले भारत अनेकों राष्ट्रीयताओं में विभाजित थे ।

बजरंग लाल अत्रि, प्रधान निजी सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, भारत।

य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्र तुष्टवं । विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनं ।। (**ऋगवेद,** 3/53/12)

ऋषभद्भरतो जज्ञे ज्योष्ठः पुत्रशतस्य सः । कृत्वा राज्यं स्वधर्मेण तथेष्ट्वा विविधान् मखान् ।। (**विष्णुपुराण,** 2/1/28)

ततश्च भारतं वर्षमेतल्लोकेषु गीयते । भरताय यतः पित्रा दत्तं प्रातिष्ठता वनम् ।। (**विष्णुपुराण,** 2/1/28)

येषां खलु महायोगी भरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठगुण आसीत्–येन–इदं भारतम्–इति व्यपदिसन्ति ।। (**भागवतपुराण**/5/4/9)

ऋषभो मरुदेव्याश्य ऋषभात् भरतो अभवत् । ऋषभो दत्त श्रीः पुत्रे शालग्रामे हरिगत ।। भरताद् भारतं वर्षं भरताद् सुमतिस्त्वत्वभूत् ।। (**अग्निपुराण,** 107/11–12)

हिमाद्रेः दक्षिणं वर्षं भरताय न्यवेदयत् । तस्मात्तु भारतं वर्षं तस्य नाम्ना विदुर्बुधाः ।। (**लिंगपुराण,** 47/23)

नाभेः पुत्रश्च ऋषभः ऋषभात् भरतो अजायत । तस्य नाम्ना त्विदं वर्षं भारतम् चेति कीर्त्यते ।। (**स्कंदपुराण,** 37/57)

सोभिषिच्यर्षभ्ज्ञः पुत्र महाप्रव्रज्या स्थितः। हिमाव्हं दक्षिणं वर्षं तस्य नाम्ना विदुबुर्धाः ।। (**ब्रह्माण्डपुराण,** पूर्व भाग, अनुषंगपाद, 14/61–62)

भरणाच्च प्रजानां वै मनुर्भरत उच्यते । निरुक्त वचनाच्चैव वर्षं तद्भारतम् स्मृतम् ।। (**वायुपुराण**, 1/32/7)

हिमाव्हं दक्षिणं वर्षं भरताय पिता ददौ । तस्मात् तु भरतं वर्षं तस्य नाम्नां महात्मनः।। (**मार्कण्डेयपुराण,** 53/40–41)

चक्रवर्ती सुतो जज्ञे दुष्यन्तस्य महात्मनः । शकुंतलायां भरतो यस्य नाम्ना तु भारताः ।। (**ब्रह्मपुराण,** 13/57)

अथाहं वर्णयिष्यामि वर्षे अस्मिन् भारते प्रजजा । भरणाच्च प्रजानां वै मनुर्भरत उच्यते ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/5)

निरुक्त वचनाच्चैव वर्षं तद् भारतं स्मृतम् । यतः स्वर्गश्च मोक्षश्च मध्यमश्चापि हि स्मृतः ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/6)

भरणाच्च प्रजानां वै मनुर्भरत उच्यते ।। निरुक्त वचनाच्चैव वर्षं तद् भारतं स्मृतम् ।। (**वायुपुराण,** 32/7)

उत्तरेण समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणे । वर्षतद भारतं नाम भारती यत्र संतति।। (**ब्रह्मपुराण,** 19/1)

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् । वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र संतति ।। (**विष्णुपुराण,** 2/3/1)

पश्चिमेसिन्धुनद्युते सेतुबन्धे हि दक्षिणे । उत्तरे बदरीस्थाने पूर्वे च कपिलान्तिके ।। (**भविष्यपुराण,** 20/10)

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमवत् दक्षिणं च यत् । वर्षं तद्भारतं नाम येयं भारती प्रजा ।। (**वायुपुराण,** 1/32/6)

भद्राश्व भारतं चैव केतुमालश्च पश्चिमे । उत्तरश्चैव कुरूवः कृतपुण्यप्रतिश्रया ।। (**मत्स्यपुराण,** 113/44)

पूर्वदक्षिणतश्चापि किन्नरों वर्षेच्यते । भारतं दक्षिणे प्रोक्तं हरिर्दक्षिणपश्चिमे ।। (**वामनपुराण,** 13/4)

अनेकरत्ननिचयो चाम्बूनदमयो गिरिः । भूगोमध्यगो मेरूरूभयत्र विनिर्गतः ।। (**सूर्यसिद्धान्त,** 12/34)

आयतस्तु कुमारीतो गंगायाः प्रवहावधिः। तिर्यगूर्ध्वंतु विस्तीर्णः सहस्राणिदशैवतु ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/10)

अयन्तु नवमस्तेषं द्वीपः सागरसंवृतः । योजनानां सहस्रं तु द्वीपो अयं दक्षिणोत्तरम् ।। (**वायुपुराण,** 32/11)

यस्त्वयं मानवो द्वीपस्तिर्यग्यामः प्रकीर्तितः । य एनं जयते कृत्स्नं स सम्राडिति कीर्तितः ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/15)

नवयोजनसाहस्रोविस्तारश्च द्विजोत्तमाः । कर्मभूमिरियंस्वर्गमपवर्गं च इच्छताम् ।। (**ब्रह्मपुराण,** 19/2)

भारतस्यास्य वर्षस्य नवभेदान्निशामय । इन्द्रद्वीपः कसेरूमान् ताम्रपर्णोगभस्तिमान् । नागद्वीपस्तथासौम्योगन्धर्वस्त्वथवारूणः ।। (***ब्रह्मपुराण,*** *19/6*)

अयंतुनवमस्तेषां द्वीपः सागरसंवृतः । योजनानाम् सहस्रश्च द्वीपोऽयं दक्षिणोत्तरात् । पूर्वेकिरातास्तिष्ठन्तिपश्चिमें यवनाः स्थिताः । ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या मध्ये शूद्राश्चभागशः ।। (**ब्रह्मपुराण,** 19/8)

सप्त चास्य महावर्षे विश्रुताः कुलपर्वताः । महेन्द्रो मलयः सहयः शुक्तिमान ऋक्षवानपि ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/17)

विंध्यश्च पारियात्रश्च इत्येते कुलपर्वताः । तेषां सहस्रशश्चान्ये पर्वतास्तु समीपतः ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/18)

पीयन्ते यैरिमा नद्यो गंगा सिन्धु सरस्वती । शतद्रुश्चन्द्रभागाश्च यमुना सरयुस्तथा । इरावती वितस्ता च विपाशा देविका कुहूः ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/21)

गोमती धूतपापा च बाहुदा च दृषद्वती । कौशिकी च तृतीया च निश्चीरा गण्डकी तथा । चक्षुर्लौहित इत्येता हिमवत्पाद निःसृताः ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/22)

वेदस्मृति वेत्रवती वृत्रघ्नी सिंधुरेव च । पर्णाशा चन्दना चैव सदानीरा मही तथा ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/23)

पारा चर्मण्यवती यूपा विदिशा वेणुमत्यपि । शिप्रा हयवन्ती कुन्ती च पारियात्राश्रिताः स्मृताः ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/24)

शोणो महानी चैव नर्मदा सुरसा किया । मन्दाकिनी दशार्णा च चित्रकूटा तथैव च । तमसा पिप्ली श्येनी करतोया पिशाचिका ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/25)

विमला चंचला चैव वंजुला वालुवाहिनी । शक्तिमन्ती शुनी लज्जा मुकुटा हृदिकापि च । ऋक्षवन्त प्रसूतास्ता नद्यो अमलजलाः शुभाः ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/26)

तापी प्योष्णी निर्विन्ध्या क्षिप्रा च निषधा नदी । वेण्वा वैतरणी चैव विश्वमाला कुमुद्वती ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/27)

तोया चैव महागौरी दुर्गा चान्तःशिला तथा । विन्ध्यपाद प्रसूताः नद्यः पुण्यजलाः शुभाः ।। (मत्स्यपुराण, 114/28)

गोदावरी भीमरथी कृष्णवेणी च वंजुला । तुंगभद्रा सुप्रयोगा वाह्या कावेरी अथापि च । दक्षिणापथ नद्यास्ताः सह्यपादात् विनिःसृताः ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/29)

कृतमाला ताम्रपर्णी पुष्पजा चोत्पलावती । मलयात् निःसृताः नद्यः सर्वाः शीतजलाः शुभाः ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/30)

त्रिषामा ऋषिकूल्या च इक्षुला त्रिदिवाचला । लांगूलिनी वंशधरा महेन्द्रतनयाः स्मृताः ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/31)

ऋषीका सुकुमारी च मन्दगा मन्दवाहिनी । कृपा पलाशिनी चैव शुक्तिमत्प्रभवाः स्मृताः ।। (**मत्स्यपुराण,** 114/32)

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती, नर्मदा सिन्धु कावेरी जलेस्मिन सन्निधिं कुरू ।। (**ऋगवेद**– 7/49/2)

प्रसीद स्वस्य राष्ट्रस्य राज्ञः सर्वबलस्य च । गर्भिणीनां च वृद्धानां व्रीहीणां च गवां तथा ।। ब्राह्मणानां च सततं शांति कुरू शंभं कुरू । अन्नं कुरू सुवृष्टिं च सुभिक्षमभयं तथा । राष्ट्रं प्रवर्धतु विभो शांतिर्भवतु नित्यशः ।। देवानां ब्राह्मणानां च भक्तानां कन्यकासु च । पशूनां सर्वभूतानां शांतिर्भवतु नित्यशः ।। (**वराहपुराण**, 192/4–11)

Chapman, G. P. (2003). *The geopolitics of South Asia: From early empire to the nuclear age* (2nd Ed. p. 16). London: Ashgate Publishing Limited.

Shastri, J. L., Kunst, A., Bhatt, G. P. & Tagare, G. V. (1969). *Ancient Indian tradition & mythology: Purā□as in Translation* (P. 56). Delhi: Oriental literature.

Singh, M. R. (1972). *Geographical data in the early Purā□as: A critical study* (p. 2). Culcutta: Punit Pustak